5

पाप के व्यवहार पर जय पाना

मसीही होने के नाते हमें न केवल पाप के दोष पर विजय मिली है, बल्कि हमें पाप के व्यवहार पर भी जय प्राप्त हुई है। कहां तक? क्या मसीही लोग सभी पाप करने से बच सकते हैं? यह बात हमें एक विवादास्पद प्रश्न पर ले आती है कि क्या मसीही व्यक्ति के लिए पाप करना सम्भव है?

इस पत्री की कई आयतें यह कहते हुए प्रतीत होती हैं कि मसीही व्यक्ति पाप नहीं करता, वास्तव में कर नहीं सकता। इन आयतों पर ध्यान दें:

> जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है (1 यूहन्ना 3:6)।
>
> जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज[1] उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है (1 यूहन्ना 3:9)।
>
> हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता ... (1 यूहन्ना 5:18)।

कई लोग इन शब्दों को बहुत ही अक्षरश: ले लेते हैं। उनका मानना है कि एक बार किसी का उद्धार हो गया, तो वह सदा के लिए बचाया गया। इस अवधारणा के अनुसार मसीही व्यक्ति इस प्रकार से पाप नहीं कर सकता कि वह अपने अनन्त उद्धार को खो दे। इस शिक्षा के समर्थक इन आयतों का इस्तेमाल यह साबित करने की कोशिश में करते हैं कि सच्चा मसीही पाप नहीं करता। यदि मसीही लगने वाला व्यक्ति पाप *करे* तो? उनका उत्तर यह है कि पाप इसी बात का प्रमाण है कि जिस व्यक्ति ने पाप किया है वह वास्तव में मसीही नहीं था, चाहे दिखने में वह मसीही लगता था।

क्या वह सही है? क्या यह असम्भव है कि कोई मसीही पाप करे? नीचे दिए गए विचार इस सोच को गलत बताते हैं।

(1) यह कहना कि मसीही व्यक्ति पाप नहीं कर सकता अनुभव के विपरीत है। हम जो परमेश्वर की संतान हैं जानते हैं कि हमने पाप किया है, और हमें उनका भी पता है जिन्हें हम जानते हैं कि वे सचमुच में मसीही हैं पर फिर भी उन्होंने पाप किया। यह भी बाइबल के समयों में मसीही लोगों के अनुभव के विपरीत है क्योंकि नये नियम में चेलों के पाप करने के ढेरों उदाहरण हैं।[2]

(2) यह बात नये नियम को बहुत हद तक व्यर्थ बना देती है, क्योंकि नये नियम का अधिकतर भाग मसीही लोगों से पाप न करने का आग्रह करते हुए ही लिखा गया।

(3) यह बाइबल की कई आयतों के उलट है जो यह सिखाती हैं कि मसीही लोगों के

लिए इस प्रकार से पाप करना सम्भव है कि वे अनन्त काल के लिए नाश हो जाएं।[3] नया नियम विश्वास त्याग की सम्भावना के बारे में बार-बार बताता है।

परन्तु इन आयतों को अक्षरश: लेने में बड़ी दिक्कत यह है कि मसीही व्यक्ति के लिए विश्वास करना सम्भव है कि ऐसी व्याख्या यूहन्ना को अपने ही विपरीत बता देगी। 1 यूहन्ना 1:8 में उसने कहा, ''यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं: और हममें सत्य नहीं।'' 1:10 में उसने घोषणा की कि ''यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो झूठा उसे ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।'' यूहन्ना ने कहा कि मसीही लोग पाप करते हैं!

तो फिर उसके यह लिखने का क्या अर्थ था कि ''जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता,'' ''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता,'' और ''जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता''? यह मानते हुए कि यूहन्ना ने कहा कि मसीही लोग पाप *कर सकते* हैं। आम समझ हमें यही सुझाव देती है कि यूहन्ना के कहने का अर्थ कुछ इस प्रकार था, ''मसीही लोग पाप में बने नहीं रहते; पाप उनके जीवनों का आदर्श नहीं है।'' इस व्याख्या में तथ्य के द्वारा ज़ोर दिया गया है कि तीनों आयतों में क्रियाएं वर्तमानकाल में हैं, जिसमें काल निरन्तर क्रिया का सुझाव देता है और इस संदर्भ में पाप करते रहना है। विश्वासी मसीही पाप करना जारी नहीं रखता या पाप को अपनी आदत नहीं बनने देता।[4] यह विचार हाल ही के एक अनुवाद में बड़ी अच्छी तरह व्यक्त किया गया है:

> उसमें बना रहने वाला कोई भी व्यक्ति पाप करता नहीं रहता (1 यूहन्ना 3:6; ESV)।
>
> परमेश्वर से जन्मा कोई व्यक्ति पाप को अपनी आदत नहीं बनाता, क्योंकि परमेश्वर का बीज उसमें रहता है, और वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है (1 यूहन्ना 3:9; ESV)।
>
> हम जानते हैं, कि हर कोई जो परमेश्वर से जन्मा है पाप करता नहीं रहता ... (1 यूहन्ना 5:18; ESV)।[5]

मसीही होने के नाते हमारे लिए पाप में बने रहने से बचना कैसे सम्भव है? बेशक हम से कुछ करने की मांग की जाती है पर पाप करने से दूर हम केवल मसीह की सहायता के द्वारा ही रह सकते हैं।

मसीह ने हमारे लिए क्या किया?

इस पत्री में हम पढ़ते हैं कि मसीही लोग धार्मिक जीवन कैसे बिता सकते हैं: 1 यूहन्ना 5:18 के अनुसार, ''जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता [आदत के अनुसार]; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है।'' यीशु मसीह, जो मूल में ''परमेश्वर से जन्मा'' था, हमें बचाए रखता है! वह हमें ''पाप न करने'' के योग्य बनाता है। 1 यूहन्ना 3:8 में हम फिर देखते हैं कि यीशु ''इसलिए प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।'' यीशु ने उन परीक्षाओं पर जय पाने के लिए संसार में प्रवेश किया जो शैतान हमारे रास्ते

में रखता है, ताकि हम पाप करें। फिर 1 यूहन्ना 3:9 में प्रेरित ने कहा, ''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है।'' वह ''बीज'' जो भी है, उसे प्रभु द्वारा उपलब्ध कराया गया है और वह हमें पाप के लिए जीने के बजाय मसीह के लिए जीने के योग्य बनाता है।

ये आयतें सुझाव देती हैं कि हम पाप करने पर विजय पा सकते हैं और हमें पाने की कोशिश करनी चाहिए, परन्तु हम वह विजय अपने आप में नहीं पा सकते! पाप करने पर विजय हम मसीह के कारण पा सकते हैं! 1 यूहन्ना 4:4 में हम पढ़ते हैं, ''हे बालको, तुम परमेश्वर के हो: और तुमने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है।'' मसीह के कारण हम संसार पर और पाप पर जय पा सकते हैं जो संसार में है। जो हम में है अर्थात मसीह वह किसी से भी जो संसार में है, बड़ा है!

हम क्या करें?

पाप करने पर जय पाने के लिए हमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के दिल से प्रयास करने और अपने जीवनों में पाप पर जय पाना आवश्यक है। पूरी पत्री में यूहन्ना ने अपने पाठकों से पाप न करने का आग्रह किया। उसने उन्हें लिखा ताकि वे पाप न करें (1 यूहन्ना 2:1)। उसने उन्हें पाप के अंधकार में नहीं, बल्कि ज्योति में चलने के लिए प्रोत्साहित किया (1 यूहन्ना 1:6, 7)। उसने उन्हें बताया कि पापपूर्ण अभ्यास से प्रेम (या उसमें लगे रहना) नहीं चाहिए (1 यूहन्ना 2:15-17)। उसने उन्हें धार्मिकता का अभ्यास करने को प्रोत्साहित किया (1 यूहन्ना 2:29)। फिर 1 यूहन्ना 3 में उसने हमें पाप से बचने और धार्मिकता का जीवन बिताने के चार कारण बताए।

भविष्य की हमारी आशा के कारण (3:1-3)

> [1]देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। [2]हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। [3]और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

जब मसीह वापस आएगा, तो हम ''उसके जैसे'' होंगे। हमें यह आशा है इसलिए उसके दोबारा आने पर उसकी संगति में ग्रहण किए जाने के लिए अपने आपको योग्य बनाने के लिए हम अपने आपको ''जैसा वह [शुद्ध] है'' वैसे ही शुद्ध करेंगे।[6]

परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के कारण (3:4-10)

> [4] जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध है और पाप तो...[5] और तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप

नहीं। [6]जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न
तो उसे देखा है, और न उस को जाना है। [7]हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो
धर्म के काम करता है, वह उसकी नाई धर्मी है। [8]जो कोई पाप करता है, वह शैतान की
ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है: परमेश्वर का पुत्र इसलिए
प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे। [9]जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप
नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता,
क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है। [10]इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने
जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने
भाई से प्रेम नहीं रखता।

यूहन्ना ने लोगों के दो समूहों और जीने के उनके ढंगों में अन्तर किया। एक ओर तो कुछ लोग हैं जो परमेश्वर की संतान हैं। उनका जीवन कैसा है? वे पाप करने के आदी नहीं हैं, पर धार्मिकता का जीवन बिताते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग, शैतान की संतान हैं। वे पाप करने के आदी हैं! यूहन्ना इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि हम परमेश्वर की संतान हैं न कि शैतान की संतान, इसलिए हमारे लिए पाप करते रहना सही नहीं है! परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के कारण यानी इसलिए कि हम उसकी संतान है, हमें धार्मिकता का जीवन जीना चाहिए और पाप से दूर रहना चहिए। पाप करते और गलत जीवन जीते रहकर धार्मिक होने का दावा करना बकवास होगा।

दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों के कारण (3:11-18)

[11]क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक-दूसरे से प्रेम
रखें। [12]और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई को घात
किया: और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके
भाई के काम धर्म के थे।

[13]हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना। [14]हम जानते हैं,
कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाइयो से प्रेम रखते हैं: जो
प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है। [15]जो कोई अपने भाई से बैर रखता है,
वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता। [16]हमने
प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए
प्राण देना चाहिए। [17]पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई
को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना
रह सकता है? [18]हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के
द्वारा भी प्रेम करें।

यूहन्ना की नज़र में पाप की बुरी किस्म शायद प्रेम का अभाव है। उसने कहा कि यदि हम अपने भाई से घृणा करते हैं तो हम उसकी हत्या के दोषी हैं! इसलिए हमें अपने भाइयों से प्रेम रखते हुए पाप से बचना और धार्मिकता से रहना चाहिए। दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों के कारण

यानी इसलिए कि वे मसीह में हमारे भाई और बहनें हैं, हम उनसे प्रेम करके धार्मिकता वाला जीवन बिताएंगे।[7] हम उनके विरुद्ध पाप करने से बचेंगे।

अपनी वर्तमान आशिषों के कारण (3:19-24)

> [19]इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसके विषय में हम उसके सामने अपने-अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे। [20]क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है। [21]हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने हियाव होता है। [22]और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।
>
> [23]और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उसने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें। [24]और जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह इसमें; और वह उसमें बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है।

इन आयतों में यूहन्ना ने कहा, कि वर्तमान में हमें यह आशिषें मिली हैं:

(1) यह हयाव कि हमें परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिया गया है (आयतें 21, 22),
(2) उत्तर मिली प्रार्थना का आश्वासन (आयत 22),
(3) यह प्रतिज्ञा कि परमेश्वर हम में वास करता है (आयत 24ख),[8]
(4) पवित्र आत्मा का वास जिसे प्रभु ने अपने बच्चों को दिया है (आयत 24ख)।

हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं मिली हैं, इस कारण हमें पाप से बचना और धार्मिक जीवन बिताना चाहिए; या, जैसा कि यूहन्ना ने कहा, हमें ''उसकी आज्ञाओं को मानना'' या ''जो उसे भाता है वही करना,'' ''उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना,'' और ''आपस में प्रम रखना'' चाहिए।

सारांश

हम मसीह के द्वारा पाप के व्यवहार पर जय पा सकते हैं; हम आदत अनुसार पाप किए बिना विजयी मसीही जीवन जी सकते हैं, परन्तु हम ऐसा करते हैं या नहीं यह प्रभु पर निर्भर नहीं है। मसीही बनकर हम अपने आप धार्मिक जीवन जीना आरम्भ करते हैं। हमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने अर्थात ज्योति में चलने (1 यूहन्ना 1:7) के लिए पूरा ज़ोर लगाना पड़ता है। यदि हम पूरा ज़ोर लगाते हैं तो परमेश्वर हमें अपने जीवनों में पाप पर जय पाने के लिए बना देगा।

टिप्पणियां

[7]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स के अनुसार ''उसका बीज उसमें बना रहता है'' का अर्थ अस्पष्ट है। कइयों का मत है

कि उसका बीज ''परमेश्वर के स्वभाव'' (RSV) के समान हैं, जिसे मसीही लोग अपने मन परिवर्तन के समय अपनाते हैं। कुछ लोग ''बीज'' का अर्थ ''संतान'' के रूप में लेते हैं। कुछ ''बीज'' को पवित्र आत्मा से मिलाते हैं (बेशक रॉबर्टस ने कहा कि इस व्याख्या के लिए कोई बाइबली प्रमाण नहीं है), और अन्य ''बीज'' की व्याख्या परमेश्वर के वचन के रूप में करते हैं (देखें लूका 8:11; 1 पतरस 1:23)। (जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *दि लैटर्स ऑफ़ जॉन,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968], 85.) [2]उदाहरण के लिए शमौन जादूगर का मामला देखें (प्रेरितों 8:12-24)। [3]उदाहरण के लिए देखें गलातियों 5:4; इब्रानियों 6:4-6; याकूब 5:19, 20. [4]कई टीकाकार इस स्थिति से सहमत हैं। थॉमस एफ. जोन्स ने लिखा, ''लेखक यह रेखांकित करने के लिए कि वह पाप करने की आदत, पश्चात्ताप हीन होने की बात कर रहा है ... क्रिया के वर्तमान काल के रूपों का इस्तेमाल करना (पाप करता रहता) जारी रखता है'' (थॉमस एफ़. जॉनसन, *1, 2 और 3, जॉन,* न्यू इंटरनेशनल बाइबल कमैंट्री [पीबॉडी, मैसाच्युएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993], 71)। अन्य व्याख्याएं एफ. एफ़. ब्रूस, *दि एपिस्टल ऑफ़ जॉन: इंट्रोडक्शन, एक्सपोज़िशन एंड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: पिकरिंग एंड इंग्लिस, 1970; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 90 और रॉबर्स्ट, 82 में मिलती हैं। व्याख्याओं की तीन किसमें यानी व्याकरणीय, धर्मशास्त्रीय और परिस्थितीय, स्टिफन एस. स्माले, *1, 2, 3, जॉन,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1984), 158-64. [5]CEV 3:9 का अनुवाद है, ''परमेश्वर की संतान पापपूर्ण नहीं रह सकती। ... वे पाप करते नहीं रह सकते'' और 5:18 का अनुवाद ''हमें यकीन है कि परमेश्वर की संतान पाप करती नहीं रहती।'' जे. बी. फिलिपस में 3:6 का अनुवाद है, ''जो व्यक्ति मसीह में रहता है वह आदत के अनुसार पाप नहीं करता।'' NIV में इन आयतों का अनुवाद इस प्रकार है: ''कोई भी जो उसमें रहता है पाप नहीं करता रहता। कोई भी जो पाप करता रहता है न तो उसने उसे देखा है न उसे जानता है'' (3:6); ''कोई भी जो परमेश्वर से जन्मा है पाप करना जारी नहीं रखेगा ...'' (3:9); ''हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप करना जारी नहीं रखता'' (5:18)। [6]एक यूहन्ना में अन्तिम बातों (युगांत विज्ञान) की शिक्षा के कई हवाले हैं। यूहन्ना ने ''अन्तिम समय'' की (2:18), मसीह के द्वितीय आगमन की (1 यूहन्ना 3:1, 2; 2:28), न्याय की (4:17) और इस संसार के बदल जाने की बात की। इसके विपरीत उसने यह घोषणा भी की कि मसीही लोग सदा तक रहेंगे (2:17) और अनन्त जीवन पाएंगे (2:25)। [7]याकूब 2:14-17 से तुलना करें। [8]यूहन्ना ने 4:13 ने इस विचार को दोहराया कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के साथ हमारी संगति का प्रमाण है। इससे पहले 2:20, 27 सम्भवतया मसीही लोगों के परमेश्वर से अभिषिक्त होने की बात कहने के समय पवित्र आत्मा की ही बात की। इन आयतों में बताया गया पवित्र आत्मा का दान आत्मा का वास है (देखें रोमियों 5:5; 8:13, 26; प्रेरितों 2:38; 5:32; गलातियों 4:6; 2 तीमुथियुस 1:14)। (रॉबर्ट्स, 100-101.)

पाप से पराजित होकर

इस खुशखबरी के साथ कि मसीही लोग पाप पर जय पा सकते हैं, यूहन्ना ने सुझाव दिया कि पाप के सम्बन्ध में कुछ बुरी खबर भी है। यदि हम सचेत नहीं हैं तो पाप हमें हरा सकता है! यूहन्ना ने संकेत दिया कि पाप और शैतान से युद्ध हारना सम्भव है। उसने ''ऐसा पाप जिसका फल मृत्यु है'' की बात की:

> यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उनके लिए, जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन देगा: पाप ऐसा भी होता है, जिसका फल मृत्यु है: इसके विषय में मैं बिनती करने के लिए नहीं कहता। सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल मृत्यु नहीं (1 यूहन्ना 5:16, 17)।

एक परिभाषा: ''पाप जिसका फल मृत्यु है'' क्या है?

पाप जिसका फल मृत्यु है? क्या है। यूहन्ना ने पहले ही कहा यदि हम ''ज्योति में चलते हैं'' तो यीशु का लहू हमें ''*सब पापों से*'' शुद्ध करता है (1 यूहन्ना 1:7) और ''यदि हम अपने पापों को मान लें'' तो परमेश्वर ''हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें *सब* अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)। परिणाम यह हुआ कि ''पाप जिसका फल मृत्यु है'' ऐसा पाप नहीं हो सकता जिसे कोई मन फिराकर मान लेने को तैयार हो।

तो फिर यह क्या है? यह कोई विशेष पाप नहीं होगा (जैसे हत्या, व्यभिचार, या झूठ बोलना) बल्कि मन या हृदय की स्थिति होगी जो व्यक्ति को अपने पापों से मन फिराने और उन्हें मानने के लिए तैयार या योग्य होने से रोकती है।[1] इसलिए सम्भवतया इसे किसी और बात से मिलाया जा सकता है जिसे नये नियम में कहीं ओर कठोर मन (इब्रानियों 3:12, 13) या जलते हुए लोहे से दागा गया विवेक (1 तीमुथियुस 4:2) मिलाया जा सकता है। विश्वासत्याग की स्थिति व्यक्ति को ''मन फिराव के लिए फिर'' नया बनना सम्भव बना सकती है (इब्रानियों 6:4-6)। जब कोई मसीही यहां तक गिर जाता है तो उसने मृत्यु के योग्य पाप किया है यानी वह नरक में अनन्तकाल तक जाएगा। जब तक वह अपने व्यवहार को बदलकर मन नहीं फिरा लेता।

प्रासंगिकता: क्या कोई मसीही यह पाप कर सकता है?

हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है कि मसीही व्यक्ति वास्तव में ऐसी स्थिति में पहुंच सकता है। वह कठोर मन और लोहे से दागे होने की स्थिति में अपने आपको पा सकता है। जब वह पाता है तो उसने पाप पर जा नहीं पाई बल्कि पाप ने उसके ऊपर जय पा ली है!

इसलिए मसीही व्यक्ति के लिए पाप के ऊपर जय पाना अनिवार्य नहीं है। जब तक वह सच्चाई को थामे रखने, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने, ज्योति में चलने और अपने भाइयों से प्रेम दिखाने में सतर्क नहीं रहता वह उस व्यक्ति की स्थिति में गिर सकता है और अपने आपको वहां पा सकता है जिसने ''पाप जिसका फल मृत्यु है'' किया!

शायद हमें वह प्रक्रिया पसन्द आए जिसमें कोई व्यक्ति ऐसी जगह पहुंचता है जहां कोई पहाड़ी से नीचे की ओर साइकिल चलाने का निर्णय लेता है। पहले तो ढलान कोमल होती; किसी भी समय पीछे मुड़ना कोई मुश्किल नहीं लगेगा। फिर धीरे-धीरे ढलान तीखी हो जाती। परिणाम यह होता है कि नीचे आने की गति तेज़ से तेज़ हो जाती है इधर-उधर मुड़ना और कठिन हो जाता है। उसे समझ आ सकता है कि यह खतरनाक उतार है और इधर-उधर मुड़ना और सुरक्षा के लिए ऊपर जाने का निर्णय लेना खतरनाक है। परन्तु जब वह इधर-उधर मुड़ने की कोशिश करता है, तो उसे पता चलता है कि उसे बहुत तेज़ी से रुकना भी है और उसके लिए इधर-उधर मुड़ना असम्भव है। न चाहते हुए भी वह अन्त में नीचे गिरने पर तेज़ गति से चलता रहता है!

इसी प्रकार जब हम आदत के अनुसार पाप करने लगते हैं तो पहले तो लग सकता है कि रुक जाना आसान होगा। कई बार हम लोगों को यह कहते सुनते हैं, ''मैं जब चाहूं बंद कर सकता हूं।'' परन्तु पाप नशा है: जितना कोई पाप करता है, उतना ही उसे पाप करने की इच्छा हो सकती है। वह अपने आपको और अधिक पाप करते हुए पाता है, और तेज़ गति से नीचे की ओर जाते हुए। शायद किसी समय वह कहेगा, ''यह बहुत ही खतरनाक है; मुझे मुड़ जाना

चाहिए।'' परन्तु फिर जब वह कोशिश करता है तो उसे पता चलता है कि वह मुड़ नहीं सकता! उसका विवेक दागा गया है, उसका मन कठोर हो गया है और उसके लिए मन फिराना असम्भव है! उसने पाप किया है ''ऐसा पाप जिसका फल मृत्यु है। उसने पाप के ऊपर विजय नहीं पाई परन्तु पाप से उसके ऊपर विजय पा ली है!''

सारांश

आपके लिए कौन सी बात लागू होगी? क्या आप मसीह के द्वारा पाप पर जय पाएंगे, या पाप को अपने ऊपर जय पाने देंगे? यदि पाप ने आप के ऊपर जय पा ली है और आपका स्वामी बन गया है, तो आज ही अपनी स्थिति बदल लें। यदि आप ''हृदय से उस डॉक्ट्रिन या शिक्षा'' को मान लेते हैं जो आपको मसीह द्वारा दी गई है (रोमियों 6:17, 18) तो आपको अपने पापों से क्षमा मिल सकती है और आप प्रभु के रूप में मसीह का दावा कर सकते हैं। आप मसीह में विश्वास करके अपने पापों से मन फिराकर, मसीह में अंगीकार करके, और बपतिस्मा लेकर मसीह बन सकते हैं। आप पाप पर जय पाकर बपतिस्मे के पानी से ऊपर जाएंगे! यदि आप ऐसे मसीही हैं जो उस फिसलने वाली ढलान पर चलने लगा है जो पाप करने से नरक की ओर ले जाती है, तो शायद थोड़ा सा, और फिर थोड़ा और, आप अपने पापों को मानकर और मन फिराकर प्रभु की ओर लौट सकते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो परमेश्वर जो ''विश्वासयोग्य और धर्मी है'' आपके पाप क्षमा कर देगा!

क्या आपको परेशानी है कि आप ने ऐसा पाप किया होगा ''ऐसा पाप जिसका फल मृत्यु है''? तो मेरी बात सुनें, यदि आप परेशान हैं, तो आप ने ऐसा नहीं किया है! फिर भी, आपको समय रहते मन फिराकर मुड़ आने की आवश्यकता है! नरक का रास्ता और ढलानदार होता जाता है; जितनी आप देर करेंगे उतना ही आपके लिए मन फिराना कठिन हो जाएगा। आपको जो भी बदलाव करने की आवश्यकता है आज ही करें!

मसीह पाप पर जय पाना सम्भव बना देता है। पसन्द आपकी है: आप पाप पर जय पाना चाहेंगे या पाप को अपने ऊपर जय पाने देकर अपने आपको नरक में भेजेंगे?

टिप्पणी

[1]इस या ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचने वाले की कतारों में टॉम एल. ब्राइट, ''डिफिकल्ट पैसेजस इन 1, 2, 3 जॉन, नम्बर III'' *डंनटन लैक्चर्स* (1987), 402-6; गाय एन. वुड्स, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल ऑफ़ पीटर, जॉन एंड ज्यूड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1983), 319-22.